SHRI K. SOMAPRASAD (Kerala): Sir, I also associate myself with what the hon. Member has said.

SHRI BINOY VISWAM (Kerala): Sir, I also associate myself with what the hon. Member has said.

SHRI PRABHAKAR REDDY VEMIREDDY (Andhra Pradesh): Sir, I also associate myself with what the hon. Member has said.

Protection of the communication tradition of Kongthong, singing village of Meghalaya

श्री राकेश सिन्हा (नाम निर्देशित): सभापति महोदय, लोकतंत्र का वैशिष्ट्य होता है कि हम उन सब लोगों की रक्षा करते हैं, जो हाशिये पर होते हैं, खासकर सांस्कृतिक विरासत का। मैं मेघालय के एक ऐसे गाँव का जिक्र करना चाहता हूँ, जहाँ की विरासत पूरी दुनिया के लिए एक सौन्दर्य का विषय हो सकती है, intangible heritage में आ सकती है। मेघालय का एक कॉन्गथॉन्ग गाँव है, जिसकी आबादी 300 है और उस गाँव में जो भाषा बोली जाती है, वह हमारी भाषा नहीं है, बल्कि वह भाषा एक ट्यून तैयार करती है। वहाँ माँ हर बच्चे के जन्म के बाद एक ट्यून तैयार करती है, जो उस व्यक्ति के साथ life-long रहती है और वह ट्यून उसकी मृत्यु के बाद ही जाती है। उस ट्यून के आधार पर लोग एक-दूसरे को बुलाते हैं। काफी दूर माउंटेन में जो लोग रहते हैं, वे एक-दूसरे को उसी ट्यून के आधार पर बुलाते हैं। इसी तरह की एक ट्यून कुस्कोय नाम के गाँव में भी है, जो कि नॉर्थ टर्की में है, उसको Whistling Village कहते हैं। उस गाँव को यूनेस्को ने Intangible Cultural Heritage में शामिल किया है। जो कॉन्गथॉन्ग गाँव है, वहाँ आज इस ट्यून का decline हो रहा है, क्योंकि आज modern technology जिस प्रकार से हमारे समाज और सभ्यता पर हावी हो रही है, वह विविधताओं और भिन्नताओं को समाप्त कर रही है। इसी कारण, यह गाँव और यहाँ की यह संस्कृति संकट में है। आप कल्पना कीजिए, हर माँ अपने बच्चे के लिए एक अलग धुन तैयार करती है और हर व्यक्ति की एक अलग धुन है। यह लगभग सदियों से हो रहा है। पहले तो यह धुन आसपास के गाँवों में गई, लेकिन अब यह धुन धीरे-धीरे सिमटती जा रही है।

मेरी भारत सरकार से और आपके माध्यम से सदन से भी अपील है कि जिस प्रकार से नॉर्थ टर्की के कुस्कोय विलेज को यूनेस्को के Intangible Cultural Heritage में शामिल किया गया है, उसी तरह से मेघालय के कॉन्गथॉन्ग गाँव की इस ट्यून को बचाने के लिए, इस विरासत को बचाने के लिए इसको भी उसमें शामिल किया जाए और इसकी एक हेरिटेज लाइब्रेरी क्रिएट की जाए। मेरा अनुरोध है कि ऐसी जितनी प्रकार की ट्यूंस हैं, उनको रिकॉर्ड करके रखा जाए, क्योंकि यह हमारी सभ्यता की एक बड़ी विरासत है। यही मेरी अपील है। मेरी सदन से भी अपील है कि इस कार्य को करने में सरकार पर एक तरह से एक नैतिक दबाव बने, धन्यवाद।

श्री हरनाथ सिंह यादव (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

श्री अजय प्रताप सिंह (मध्य प्रदेश): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

श्री कैलाश सोनी (मध्य प्रदेश): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

श्री संभाजी छत्रपति (नाम निर्देशित): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

श्री कामाख्या प्रसाद तासा (असम): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

श्री अनिल बलूनी (उत्तराखंड): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

श्री महेश पोद्दार (झारखंड): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

श्री रामकुमार वर्मा (राजस्थान): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

श्री राम विचार नेताम (छत्तीसगढ़): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

श्रीमती रूपा गांगुली (नाम निर्देशित): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करती हूँ।

श्री सुरेश गोपी (नाम निर्देशित): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

महंत शम्भुप्रसादजी तुंदिया (गुजरात): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री परशोत्तम रुपाला): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

श्री शिव प्रताप शुक्ल (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

श्री ओम प्रकाश माथुर (राजस्थान): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

श्री आर. के. सिन्हा (बिहार): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

श्री जुगलसिंह माथुरजी लोखंडवाला (गुजरात): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।